ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्।
सामवेद 1325
हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप हमें सब पापाचारणों से आवश्य दूर करें। O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 43, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 दिसम्बर, 2019 से रविवार 8 दिसम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

युवा प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए सफलता एवं सहयोग का अनुपम केन्द्र

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान - एक परिचय

भारतीय इतिहास में अगस्त का महीना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारत की स्वाधीनता के 71 वर्ष पूर्ण होने से 14 दिन पहले 1 अगस्त 2018 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान का शुभारंभ किया। इस संस्थान का उद्देश्य है कि देश की असाधारण प्रतिभाओं के समग्र विकास हेतु उन्हें हर तरह के उचित साधन और सुविधाएं प्रदान करके सफलता के द्वार तक पहुंचाना। जो विद्यार्थी आर्थिक अभाव के कारण देश के उच्च सेवा पदों पर आसीन होने की क्षमता और सामर्थ्य तो रखते हैं, लेकिन उनकी माली हालत ठीक न होने के कारण वे उस पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। उन सभी प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए सफलता का अनुपम केंद्र सिद्ध हो रहा है- महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान। संस्थान ने सिद्ध किया है कि-

पत्ते लाख कोशिश करें,
फूल को छिपाने की।
उनमें उतनी ताकत कहां,
जो फूल की खुशबु रोक सकें।।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान में पढ़ने वाले बच्चे उस फूल की तरह हैं, जिनकी खुशबू को किसी भी प्रकार के अवरोध रूपी पत्ते रोक नहीं सकते। यूं तो प्रतिभा का अंकुर सबके भीतर होता है, लेकिन फिर भी सब

प्रतिभाओं को तलाशने में सहयोगी बनें आर्यजन

समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं अन्य सभी आर्य शिक्षण संस्थानों के अधिकारियों से निवेदन है कि अच्छे प्रतिभावान छात्रों को महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की जानकारी दें और आर्यसमाज की इस सेवा का लाभ लेने के लिए अपने परिवार, विद्यालयों, गुरुकुलों के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को प्रेरित करें।

- शेष पृष्ठ 4 एवं 5 पर

सम्पादकीय — नारी के प्रति राक्षसी प्रवृत्ति निन्दनीय और अमानवीय

गुड़िया, निर्भया और अब प्रियंका रेड्डी : इस हैवानियत का दोषी कौन?

सरकारों से सब्जियों और पेट्रोल के महंगे दामों में उलझते समाज को पता ही नहीं चला कि बीते वर्षों में बेटियों का रेप और उनकी इज्जत कितनी सस्ती हो गई है। एक बार फिर हैदराबाद में डॉक्टर प्रियंका रेड्डी का गैंगरेप और फिर हत्या कर दी गई। 27 साल की एक पढ़ी-लिखी डॉक्टर का वो हाल किया गया जिसे देखकर हर लड़की का मन अंदर तक सिहर उठे। सड़क के किनारे पड़े और कोयला बन चुके शरीर की तस्वीर शायद ही अंतर्मन से जल्दी ओझल हो सकेगी। इस तस्वीर ने बेटियों को अकेले शहरों में छोड़ने वाले माता-पिता के माथे पर चिंता की लकीरें और गहरा गई हैं।

16 दिसम्बर 2012 निर्भया दिल्ली का निर्भया कांड अभी तक जेहन से मिटा भी नहीं था कि अचानक चार जुलाई 2017 हिमाचल का कोटखाई गुड़िया रेप हत्याकांड गूंज उठा। सवाल दर सवाल खड़े होते रहे, एक के बाद वीभत्स और दर्दनाक रेप और हत्या के मामले सामने आते रहे है। केंडल मार्च से लेकर सड़कों पर प्रदर्शन भी हुए, कानून भी बने लेकिन दरिंदों तक न फांसी का फंदा पहुंचा न प्रदर्शन की गूंज। नतीजा फिर वही हुआ तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद के शादनगर इलाके में रहने वाली डॉक्टर प्रियंका की लाश जली हालत में मिलती है, पुलिस वहां पहुंचती है और लाश की शिनाख्त की कोशिश करती है जो 100 फीसदी जल चुकी थी, सिवाए स्कार्फ के टुकड़े के। गले में पड़ा लॉकेट इशारा कर रहा था कि ये लाश एक महिला की है। प्रियंका के परिवार को बुलाया जाता है जहां इन्हीं चीजों से इस बात की पुष्टी हो जाती है कि वो जलकर कोयला हो चुकी लाश प्रियंका रेड्डी की ही थी। इसी लाश को देखकर पुलिस की नींद असल में खुल पायी। फिर पुलिस सक्रिय होती है क्योंकि ये एक महिला डॉक्टर की हत्या का मामला होता है। छानबीन में पता चलता है कि हत्या से पहले प्रियंका के साथ गैंगरेप भी हुआ था।

- शेष पृष्ठ 2 पर

वेद-स्वाध्याय

उचित देशकाल में बलिदान

उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्।
यदि श्रातं जुहोतन यद्यश्रातं ममत्तन।। - ऋ. 10/179/1
ऋषि: **शिविरौशिनर:।।** देवता - **इन्द्र:।।** छन्द: - **निचृदनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **उत्तिष्ठत** = उठो, खड़े होओ **अवपश्यत** = और सावधानी से देखो, **इन्द्रस्य** = इन्द्र के **ऋत्वियम्** = ऋतु-ऋतु के अनुकूल, समय-समय पर दिये जानेवाले **भागम्** = हवि के, बलिदान के भाग को देखो। **यदि** = यदि **श्रातम्** = [यह हवि] पक चुकी है तो **जुहोतन** = इसका हवन कर दो और यदि **अश्रातम्** = पकी नहीं है तो **ममत्तन** = [ठहरो, दु:खी मत होओ] प्रसन्न होकर इसे और पकाते जाओ।

विनय - हे मनुष्यो! उठो, देखो कि इस समय इन्द्र की कौन-सी आहुति का समय है। यह काल-इन्द्र समय-समय पर संसार से भारी-भारी आहुतियाँ माँगता है और इसी से यह संसार उन्नत होता है। यह देश-इन्द्र समय-समय पर बड़े-बड़े बलिदान चाहता है और इस बलिदान को पाकर ही यह अपने एक बड़े अभ्युत्थान के पग को आगे उठा सकता है और हम इस जीवात्मा-इन्द्र के लिए समय-समय पर आत्म बलिदान करते हुए, ऋतु-ऋतु के अनुकूल इसका यजन-हवन करते हुए, बल्कि एक दिन के भी भिन्न-भिन्न समयों पर उस-उस समय के अनुकूल उसको उसके अन्न-ज्ञान आदि की हवि का भाग प्रदान करते हुए चलते हैं, तभी हम आत्मोन्नति कर सकते हैं। इसलिए हमें सदा खड़ा रहना चाहिए, जागते रहना चाहिए और खड़े होकर सावधानी से देखते रहना चाहिए कि कहीं, किसी आहुति का समय तो नहीं आ गया है? कहीं संसार को, देश को या अपने आत्मा को हमारे किसी बलिदान की आवश्यकता तो नहीं आ गई है? देखना, यदि हम प्रमाद के कारण समय को चूक जाएँगे, जिस समय बलिदान करना चाहिए उस समय बलिदान न कर सकेंगे, तो हम न केवल उन्नति से वञ्चित हो जाएँगे अपितु बहुत पिछड़ जाएँगे, पतित हो जाएँगे, अवनति के गर्त्त में गिर जाएँगे, अत: उठो और देखते रहो कि कहीं इन्द्र का भाग देने की ऋतु तो नहीं आ गई है?

परन्तु आहुति सदा पकी हुई ही देनी चाहिए। कच्ची आहुति से कुछ फल नहीं होता, किन्तु हानि ही होती है। जैसेकि वृक्ष से बिना पके गिरा हुआ फल किसी काम नहीं आता बल्कि खानेवाले को हानि पहुँचाता है, उसी तरह अपने-आपको बिना पकाये जो यूँ ही जोश में आकर बलिदान कर दिया जाता है उससे कुछ नहीं बनता, बल्कि बहुत बार वह आत्मघातरूप होता है, अत: यदि आहुति पकी हुई हो तब तो उसका हवन कर दो, यदि न पकी हो तो ठहर जाओ। इसके लिए दु:खी भी मत होओ। यदि तुम आहुति के समय तक इसे नहीं पका सके तो अब दु:खी होने से क्या लाभ? अब तो प्रसन्न होकर इसे फिर पकाओ, पकाते जाओ जिससे कि अगले आहुतिकाल में तो तुम इसे अवश्य दे सको, अगले बलिदान के समय तुम अवश्य पके हुए होओ।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

गुड़िया, निर्भया और अब प्रियंका रेड्डी....

.....अपराधियों को इस बात का पूरा यकीन हो चूका है कि इस देश में बलात्कारी को फांसी कभी नहीं होगी, तो उन्हें क्यों और किस बात का डर। पराली के धुंए की तरह जिंदा जलते शरीर से उठने वाला धुंआ देश की राजनीति के लिए लाभदायक नहीं, इसलिए ऐसे मामलों की चर्चा दो मिनट के मौन से अधिक नहीं होती है। सोचिये, जो आतंकियों को बचाने के लिए सुप्रीम कोर्ट के बाहर डेरा डाल देते है क्या आज भी रात भर जाग सबसे दस्तखत करा, अपराधियों को सुबह तक फांसी दे देंगें? .....

पुलिस ने इस मामले में 4 लोगों को गिरफ्तार किया है जिनमें एक ट्रक ड्राइवर मोहम्मद आरिफ 25 साल का है और वही मुख्य आरोपी है। उसके साथ तीन हेल्पर भी हैं, जिनकी उम्र करीब 20 साल है। पुलिस के सामने सबने रेप और हत्या का गुनाह कबूल किया है।

यह दर्दनाक किस्सा सुनकर कई सवाल में खड़े होते हैं पहला हत्यारे का मजहब देखिये दूसरा हैदराबाद में ओवेसी बंधुओं की रोजाना की भड़काऊ तकरीरे सुनिए, उनमें इस्लाम, कुरान, हिन्दू के अलावा कुछ नहीं होता। तीसरा दिल्ली के निर्भया मामले के आरोपियों को फांसी की सजा भले ही सुनाई गई लेकिन फांसी दी नहीं गई। शायद प्रियंका के हत्यारों को लगा कि निर्भया तो बच गई थी इसलिए उसके आरोपी फंसे। और मामला वहीं खत्म करने और खुद को बचाने के लिए उन्होंने प्रियंका को मौके पर ही जला दिया। यही तो किया जाता है आजकल, रेप करके सीधे हत्या ही कर दी जाए जिससे आरोप लगाने के लिए कोई बचे ही न।

चौथा जिस देश में हर साल औसतन 40 हजार रेप होते हों, हर दिन में 106 रेप और हर 10 रेप में से 4 वारदात की शिकार छोटी बच्चियां होती हों, जहां सजा सिर्फ 25 फीसदी हो यानी 40 हजार रेप करने वालों में से सिर्फ 10 हजार को ही सजा मिले और 30 हजार खुला घूमें वहां कोई क्यों डरे? अपराधियों इन आंकड़ों से हौसला बढ़ता है और वे अगले अपराध की योजना बनाते हैं वह जानते हैं दो दिन सोशल मीडिया पर शोर होगा नेताओं के बयान होंगे इसके बाद सब कुछ वही ढर्रा दोहराया जायेगा क्योंकि कोई भी सरकार न अपराधियों के मन में डर पैदा कर सकी और न महिलाओं के मन से अब तक डर निकाल सकी है। इसी कारण आज के माता-पिता जब भी बेटियों को पढ़ाने की बारे में सोचते हैं, ऐसी कोई न कोई खौफनाक घटना उनके हौसले तोड़ने का इंतजार करती रहती हैं। कैसे आज की बेटियां अपने माता-पिता को यकीन दिलाएं कि बाहर वो सुरक्षित हैं। कैसे उनसे कहें कि उन्हें पढ़ने के लिए बाहर जाने दो।

भारत सरकार के लिए क्या कहा जाए जिसकी आंखें अपराध के आंकड़े देखकर भी नहीं खुलतीं। इसलिए बेटियों को सब पर संदेह करना सिखाओ। उन्हें हथियार चलाना सिखाओ और आवश्यकता पड़ने पर उसका तुरंत उपयोग करना भी। आती-जाती सरकारों ने आज तक कुछ नहीं किया, आप उनके भरोसे न रहें! अपनी रक्षा आप करें! कोई सामने नहीं आएगा आज विपक्ष केंडल मार्च नहीं निकालेगा। सब मौन हैं इसी मौन से प्रेरित होकर प्रियंका के हत्यारों ने घटना को अंजाम देने की योजना सुबह से ही शुरू हो गई थी। प्रियंका के दोषियों के सामने निर्भया कांड उदाहरण के रूप में था। उन्हें अच्छी तरह से पता था कि वो एक महिला का रेप और हत्या की योजना बना सकते हैं और किस तरह से बच सकते हैं। वे बैखौफ थे क्योंकि ये जानते थे कि फांसी की सजा सिर्फ डराने के लिए होती है, हकीकत में कहां किसी को फांसी होती है।

अपराधियों को इस बात का पूरा यकीन हो चुका है कि इस देश में बलात्कारी को फांसी कभी नहीं होगी, तो उन्हें क्यों और किस बात का डर। पराली के धुंए की तरह जिंदा जलते शरीर से उठने वाला धुंआ देश की राजनीति के लिए लाभदायक नहीं, इसलिए ऐसे मामलों की चर्चा दो मिनट के मौन से अधिक नहीं होती है। सोचिये, जो आतंकियों को बचाने के लिए सुप्रीम कोर्ट के बाहर डेरा डाल देते हैं क्या आज भी रात भर जाग सबसे दस्तखत करा, अपराधियों को सुबह तक फांसी दे देंगें?

प्रियंका की हत्या पर किसी ने सही लिखा है कि प्रियंका तुम्हारा दर्द, तुम्हारी चीखें, तुम्हारा खून, तुम्हारे आंसू और तुम्हारा चकनाचूर विश्वास, इस देश का प्रत्येक संवेदनशील नागरिक महसूस कर पा रहा है। ईश्वर तुम्हारे माता पिता परिवारजनों को इतनी ताकत दे काश! वो इस पीड़ा को भूल जाएं। तुम जिस भी दुनिया में हो, वहां से हम बचे हुए लोगों के लिए प्रार्थना करना और परमात्मा से कहना कि धरती स्त्रियों के लायक नहीं रही। सृष्टि के समाप्त होने का समय आ चुका है। अपने दोषियों के बारे में पूछना जरुर कि तुम्हारा असली दोषी कौन है समाज, संस्कार या सरकार? - ***सम्पादक***

आर्यसमाजों में पुरोहित व्यवस्था

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना है कि दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में पुरोहितों की अनिर्वाय नियुक्ति हो। अत: जो महानुभाव दिल्ली में पुरोहित हेतु अपनी सेवाएं देना चाहते हों, वे कृपया अपनी योग्यता एवं अनुभव के प्रमाण पत्रों सहित यथाशीघ्र आवेदन करें। इच्छुक महानुभाव अपने आवेदन पत्र निम्न पते पर भेजें -

संयोजक, प्रचार विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1100011

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

आर्यों का आदि देश भारत विषय को स्पष्ट करता लेख

क्या है मूल निवासी षड़यन्त्र का असली राज?

.....जातिव्यवस्था भारत में मुगलों की देन रही है और उसी कालखंड में मुगलों के षड्यंत्रों से भारत में जाति व्यवस्था अपनी दुर्गति व परस्पर विद्वेष के शिखर पर पहुंची थी, यह बात विभिन्न अध्ययनों में स्थापित हो चुकी है। भारत के दलितों व जनजातीय समाज को द्रविड़ कहकर मूलनिवासी बताना व उनपर आर्यों के आक्रमण की षड्यंत्रकारी अवधारणा को स्वयं बाबा साहब अम्बेडकर सिरे से खारिज करते थे। बाबा साहब ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है "आर्य आक्रमण की अवधारणा पश्चिमी लेखकों द्वारा बनाई गई है जो बिना किसी प्रमाण के सीधे जमीन पर गिरती है।".....

आखिर जब जेएनयू विवाद फीस को लेकर था तो इस विवाद को मूलनिवासी से क्यों जोड़ दिया गया। फीस में मनुवाद कहाँ से आया और फीस में राम मंदिर कहाँ से आया? शायद ये चीजें आई नहीं बल्कि लाई गयी क्योंकि आजकल आपने एक शब्द सुना होगा मूलनिवासी। इस शब्द के साथ भारतीय दलित व आदिवासी समाज को जोड़ा जा रहा है। साथ ही महिषासुर और रावण की पूजा जैसे मिथक जोड़े जा रहे है, कभी शम्भुक वध से लोगों को द्रवित किया जा है तो कभी बहुजन वाद के नाम पर।

इसमें कोई आर्यों को बाहरी आक्रान्ता बताता है तो कहीं मनु स्मृति के नाम पर अनेकों झूठ और मनगढ़ंत इतिहास सोशल मीड़िया पर पढने को मिल रहा है। मुसलमान और बामसेफ वालों को मूल निवासी बताकर आधुनिक इतिहास लिखने की कोशिश जारी है। फीस विवाद के समय आखिर जेएनयु में ये मुद्दा कहाँ से आया? क्या ये कोई मजाक है या कोई षड़्यन्त्र है क्योंकि इस रूहानी इतिहास को लगभग यूट्यूब के 105 बड़े चैनलों से परोसा जा रहा है?

अगर इसकी असल गहराई में जाये तो ये एक पूरा संगठित गिरोह है जिसमें वामपंथी मीडिया, कथित सामाजिक कार्यकर्ता बामसेफ के वामन मेश्राम जैसे कुंठा में ग्रस्त लोग हैं। जो मूलनिवासी शब्द के नाम पर एक प्राचीन षड्यंत्र को नए रूप, नए कलेवर और नए आवरण में बांधकर एक देश में एक नये सामाजिक राजनितिक धार्मिक वातावरण खड़ा करनें का प्रयास कर रहे हैं और जो किसी भी मौके पर इसे भुनाने का प्रयास करते हैं?

आप पेरियार पर बोलिए वामपंथी खड़े हो जाते हैं, आप इस्लाम पर बोलिए बामसेफ वाले खड़े हो जाते हैं, आप वामपंथियों पर नवबौद्ध खड़े मिलेंगे और आप आतंक पर बोलिए कथित सामाजिक कार्यकर्ता सर्प की तरह फन उठाकर खड़े हो जायेंगे। आखिर ये प्रयास क्यों किया जा रहा है कौन ये प्रयास कर रहा है और इसका लाभ किसे मिलने वाला है इसे समझने के लिए जड़ में चलते हैं। और इसकी जड़ बाबा साहब आंबेडकर जी के धर्म परिवर्तन के समय दो मतों इस्लाम एवं इसाईयत में उपजी निराशा में है। क्योंकि ईसाइयत व इस्लाम धर्म नहीं अपनानें को लेकर बाबा साहब ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया था। उन्होंने बार बार कई मौकों पर कहा कि उनके अनुयायी हर प्रकार से इस्लाम व ईसाइयत से दूर रहें।

यानि बाबा साहब जिस बीमारी से अपने समाज को बचाना चाह रहे थे किंतु आज मूलनिवासी वाद के नाम पर भारत का दलित व जनजातीय समाज एक बड़े पश्चिमी षड्यंत्र का शिकार हो रहा है। आम्बेडकर जी के इस बयान के बाद एक बड़े और एकमुश्त धर्म परिवर्तन की आस में बैठे ईसाई और मुस्लिम धर्म प्रचारक बहुत ही निराश व हताश हो गए थे। किन्तु ईसाई मिशनरीज में उपजी तबकी यह निराशा बाद में भी प्रयासरत रही व अपने धन, संसाधनों, बुद्धि, कौशल के आधार पर सतत षड्यंत्रों को बुननें में लगी रही। पश्चिमी इसाई धर्म प्रचारकों के इसी षड्यंत्र का अगला हिस्सा है मूलनिवासी वाद का जन्म!

भारतीय दलितों व आदिवासियों को पश्चिमी अवधारणा से जोड़नें व भारतीय समाज में विभाजन के नए केंद्रों की खोज इस मूलनिवासी वाद के नाम पर प्रारंभ कर दी गई है।

इस पश्चिमी षड्यंत्र के कुप्रभाव में आकर कुछ दलित व जनजातीय नेताओं ने अपनें आन्दोलनों में यह कहना प्रारंभ कर दिया है कि भारत के मूल निवासियों (दलितों) पर बाहर से आकर आर्यों ने हमला किया और उन्हें अपना गुलाम बनाकर हिन्दू वर्ण व्यवस्था को लागू किया।

जबकि जातिव्यवस्था भारत में मुगलों की देन रही है और उसी कालखंड में मुगलों के षड्यंत्रों से भारत में जाति व्यवस्था अपनी दुर्गति व परस्पर विद्वेष के शिखर पर पहुंची थी, यह बात विभिन्न अध्ययनों में स्थापित हो चुकी है। भारत के दलितों व जनजातीय समाज को द्रविड़ कहकर मूलनिवासी बताना व उनपर आर्यों के आक्रमण की षड्यंत्रकारी अवधारणा को स्वयं बाबा साहब अम्बेडकर सिरे से खारिज करते थे। बाबा साहब ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है "आर्य आक्रमण की अवधारणा पश्चिमी लेखकों द्वारा बनाई गई है जो बिना किसी प्रमाण के सीधे जमीन पर गिरती है।"

इससे साफ है कि आज बाबा साहब के नाम पर जो मूलनिवासी वाद का नया वितंडा खड़ा किया जा रहा है वह वामन मेश्राम उनकी बामसेफ, जय मीम और ईसाई धर्म प्रचारकों के दिमाग का षड्यंत्र भर है। इस नए षड्यंत्र का सूत्रधार पश्चिमी पूंजीवाद है, जो फंडिंग एजेंसी के रूप में आकर इस विभाजक रेखा को जन्म देकर पाल-पोस रहा है। आर्य कहां से आये व कहां के मूलनिवासी थे यह बात अब तक कोई सिद्ध नहीं कर पाया व इसके बिना ही यह राग अवश्य अलापा जाता रहा है कि आर्य बाहर से आये थे। दक्षिण-उत्तर की भावना उत्पन्न करने वाला यह विचार, तात्कालिक राजनैतिक लाभ हेतु विदेशियों एवं विधर्मियों द्वारा योजनाबद्ध प्रचारित किया गया है।

वैज्ञानिक अध्ययनों, वेदों, शास्त्रों, शिलालेखों, जीवाश्मों, श्रुतियों, पृथ्वी की सरंचनात्मक विज्ञान, जेनेटिक अध्ययनों आदि के आधार पर जो तथ्य सामनें आते हैं उनके अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप बहुत विशाल क्षेत्र में फैला है। जिसमें अनेकों देश है और सब यहाँ के ही निवासी है लेकिन इन सब तथ्यों के प्रकाश में भी आँख बंद करके आखिर यह मूलनिवासी दिवस मनाने का चलन क्यों व कहां से उपजा?

यह सिद्ध तथ्य है कि भारत में जो भी जातिगत विद्वेष व भेदभाव चला वह जाति व जन्म आधारित है क्षेत्र आधारित नहीं। वस्तुत: इस मूलनिवासी फंडे पर आधारित यह नई विभाजनकारी रेखा एक नए षड्यंत्र के तहत भारत में लाई जा रही है जिससे भारत को सावधान रहने की आवश्यकता है। यह भी ध्यान देना चाहिए कि भारत में सामाजिक न्याय का व सामाजिक समरसता का जो नया सद्भावी वातावरण अपनी शिशु अवस्था से होकर युवावस्था की ओर बढ़ रहा है कहीं उसे समाप्त करने का यह नया पश्चिमी षड्यंत्र तो नहीं है?

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

ऋषि दयानन्द रणक्षेत्र में

आज से कुछ वर्ष पूर्व हमने 'ऋषि दयानन्द मैदाने जंग में' शीर्षक से एक लेख एक आर्यपत्रिका में दिया था। वास्तव में यह शीर्षक हमारा दिया हुआ नहीं था। आज से 79 वर्ष पूर्व 'आर्य मुसाफिर' मासिक उर्दू पत्र में विश्वख्याति के साहित्यकार श्री सन्तरामजी बी.ए. ने यह शीर्षक देकर एक लेख लिखा था। जिस घटना पर यह लेख लिखा गया था उसी घटना को उपर्युक्त शीर्षक से हम यहाँ देते हैं।

भारत का राजनैतिक वातावरण गर्म हो रहा था। आर्यसमाज के छोटे-बड़े लोग, नेता, विद्वान्, साधु, उपदेशक, छात्र सब राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे थे। जन-जागरण के लिए प्रत्येक क्षेत्र में आर्यसमाज के लोग सबसे पहले व सबसे आगे थे। स्वामी श्री श्रद्धानन्दजी महाराज उस युग में आर्यसमाज के सर्वमान्य नेता था। विदेशी शासन आर्यसमाज को बड़ी वक्र-दृष्टि से देखता था। सेना में आर्यसैनिक सत्यार्थप्रकाश भी न ले जा सकते थे। आर्यवीर गुलाबचन्द को सेना से सेवामुक्त कर दिया गया। कारण एक ही था कि वह आर्यसमाजी है। उन्हीं दिनों आर्यजाटों को सेना में यज्ञोपवीत धारण करने से रोका गया। उत्तरप्रदेश के वीर जाटों ने इस राजकीय आज्ञा को मानने से इन्कार कर दिया। सरकार को झुकना पड़ा। पटियाला केस खड़ा करके आर्यों को रगड़ने का षड्यन्त्र रचा गया। आर्यवीर अग्नि-परीक्षा में खरे उतरे।

उन्हीं दिनों 27 मार्च 1915 ई. के 'पाटलीपुत्र' में सूबेदार गदाधरसिंह का एक पत्र छपा। इसमें आपने सम्पादक को लिखा कि हमने (सैनिकों ने) युद्धभूमि में होली का पर्व कैसे मनाया। ये भारतीय सैनिक यूरोप में कहीं अग्रिम मोर्चे पर थे। प्रथम विश्वयुद्ध जोरों पर था। जर्मनी की शक्ति से उस समय सारा यूरोप काँप रहा था। 28 फरवरी को सैनिकों ने होली का पर्व बड़े विचित्र ढंग से तथा धूम-धाम से मनाया।

इसमें कई जातियों व मतों के लोग सम्मिलित हुए। यथा-अरब, यहूदी, हिन्दुओं के विभिन्न वर्गों के लोग, सिख भाई भी, भारत के सब प्रदेशों के लोग, मुसलमान, ईसाई भी तथा पारसी भी इसमें भाग ले रहे थे। हरी शाखाओं व पत्तों से सुन्दर यज्ञशाला बनाई गई। पीले, लाल, श्वेत रंग से 'ओ३म्' आदि लिखकर यज्ञवेदी अलंकृत की गई। अंग्रेजी राज का झण्डा भी फहरा रहा था। - ***क्रमश:***

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10, 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

बढ़ते अपराध पर कैसे लगे अंकुश? एक सकारात्मक चिन्तन

आन्तरिक परिवर्तन से सम्भव होगा समाज में बदलाव

आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मान्यताओं और परम्पराओं में समाज सुधार को सर्वोपरि माना गया है। आधुनिक परिवेश में चारों तरफ एक ही आवाज बुलन्द हो रही है कि बढ़ते अपराध पर कैसे अंकुश लगाया जाए? इस आवाज में चिन्तन कम चिन्ता ज्यादा दिखाई देती है। इस विषय पर अधिकांश लोगों का एक ही स्वर है (कठोर कानून बनाया जाए, अपराधियों को सख्त से सख्त सजा दी जाए, जोकि अपने आप में अति आवश्यक भी है, किन्तु सरकारों द्वारा कठोर नियम-कानून लागू करने पर भी अपराध घटने के बजाय लगातार क्यों बढ़ रहे हैं? इस गम्भीर विषय पर मानव समाज ऐसा क्या करे कि जिससे समाज को अपराधमुक्त बनाया जा सके। प्रस्तुत आलेख में हम क्रमशः इस विषय को एक सकारात्मक चिन्तन के रूप में देने का प्रयास करेंगे। - सम्पादक

प्रकृति में नित-नये परिवर्तन घटित होते रहते हैं। पुराने पत्ते टूटते हैं, नयी कोपलें फूटती हैं, नदी की जलधारा हमेशा नूतन-नवीन होकर बहती है। मौसम बदलते हैं, सर्दी-गर्मी, बरसात-वसंत आदि ऋतुओं का आवागमन चलता रहता है। प्रकृति में हो रहे इन परिवर्तनों को मनुष्य लगातार देखता है, ये परिवर्तन मनुष्य को आकर्षित भी करते हैं, अच्छे भी लगते हैं। प्रकृति के इन परिवर्तनों से मनुष्य के शरीर का तापमान भी घटता और बढ़ता है, सर्दी-गर्मी, बरसात तथा वसंत ऋतु के अनुसार शरीर की स्थितियां भी परिवर्तित होती हैं। किंतु इन बाहर प्रकृति के परिवर्तनों से मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों में, उसके अंत:करण में बदलाव नहीं आता। जैसे कोई वृक्ष के पत्तों को पानी से गीला करता रहे और उसकी जड़ सूखी पड़ी रहे तो फिर वृक्ष का हरा-भरा रहना मुश्किल है। जैसे पेड़-पौधें को हरा-भरा रखने के लिए जड़ों को सींचना जरूरी होता है, वैसे ही व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया में बदलाव लाने के लिए बाहर से नहीं आंतरिक वैचारिक परिवर्तन से ही बदलाव संभव होता है।

मानव समाज में अच्छे बदलाव के प्रयास आज से ही नहीं बल्कि बहुत प्राचीन समय से नित नये-नये परिवर्तनों की कोशिशें की जाती रही हैं। समाज में कुछ नया बदलाव आए? कोई नया परिवर्तन आए? समय-समय पर यहां कोई-न-कोई व्यक्ति समाज को बदलने के लिए भाषण भी दे रहा होता है कि समाज को बदलिए। कोई कहता है कि पूरे देश की शासन व्यवस्था को बदल देना चाहिए। लेकिन उन बोलने वालों की टोपियां रोज बदलती हैं, उनके झंडे रोज बदलते हैं, लेकिन खोपड़ी किसी की भी कभी नहीं बदलती, अंदर सब वैसे का वैसा ही रहता है, क्यों? क्योंकि ये जितने भी प्रयास होते हैं, सब बाहर-बाहर से ही होते हैं। इन लोगों की हालत बिलकुल वैसी है, जैसे किसी जादूगर ने अपने जादू से चूहे को शेर बना दिया, अब वह शेर तो बन गया लेकिन जैसे ही उसने बिल्ली को देखा तो वह भाग खड़ा हुआ। अब शेर बिल्ली को देखकर भाग रहा है तो जादूगर भी हैरान और वहां जो अन्य लोग खड़े थे, वे भी आश्चर्य में पड़ गए। वहां तमाशा देखने वाले लोगों ने जादूगर से कहा कि छोटे को बड़ा आकार देने वाली विद्या तो तुमने सीख ली, छोटे शरीर को बड़ा आकार तो दे दिया लेकिन अभी शरीर को ही बड़ा आकार देना सीखा है। अंत:करण का आकार बदलना नहीं सीखा, ये चूहा शरीर से तो शेर बन गया है, शेर जैसा दिखाई भी दे रहा है, लेकिन अंदर से यह शेर नहीं बना है। जो अंदर से शेर हो जाए तो फिर बाहर से शेर बने या न बने लेकिन वह भीतर से कमाल का शेर बन जाता है। एक भजन के बोल है-

आदत बुरी संवार ले, बस हो गया भजन
मन की तरगें मार ले, बस हो गया भजन

भजन की इन दो पंक्तियों का यही संदेश है कि बुरी आदतों को छोड़ कर अच्छाई को धारण कर लेना ही अपने आपमें भजन अर्थात सच्ची ईश्वर भक्ति है। जबकि मन के अंदर जो अनगिनत इच्छाओं की तरंग उत्पन्न होती है उनको काबू में कर लेना भी अपने आपमें एक उत्तम साधना है। लेकिन यह चीजे कहने-सुनने से संभव नहीं होती। मनुष्य के सारे गुणों के ऊपर उसका स्वभाव आ करके बैठ जाता है जबकि किसी का भी अच्छा या बुरा स्वभाव एक दिन में ही नहीं बन जाता। स्वभाव के पीछे होती हैं आदमी की सोच और उसकी आदतें। आदतें भी एक दिन में पक्की नहीं होती बल्कि धीरे-धीरे ये अपनी जड़ें जमाती है। पर जब आदतें मजबूत और पक्की हो जाती हैं तो फिर आदमी आदतों का ऐसा गुलाम हो जाता है कि फिर उसके चाहने न चाहने का भी कोई असर नहीं होता। आदतें उसको जबरन खींचकर वही दोहराने के लिए मजबूर कर देती हैं जो उसके उत्थान या पतन का कारण सिद्ध होता है।

आदतों का निर्माण

अच्छी या बुरी आदतों का निर्माण बचपन से ही आरंभ होता है और आदतें केवल भाषण देने से अथवा जोर जबरदस्ती से सिखाने से कभी भी निर्मित नहीं होती। इसके लिए तो उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ता है। आजकल समाज में बच्चों को समय-समय पर माता-पिता इत्यादि कहते सुने जाते हैं कि तू तो हमारी नाक कटाएगा, तू बुद्धू है, तेरे अच्छे नंबर नहीं आएंगे, तू तो कहीं चौकीदारी करेगा, इस तरह के के शब्दों से बच्चों का उज्ज्वल भविष्य नहीं होता। प्रताड़ना कभी प्रेरणा नहीं बनती, बच्चे तो देखकर ही सीखते हैं। जैसा वे अपने माता-पिता, भाई-बंधु और परिवार वालों को करते हुए देखते है वहीं उनकी आदतों में शुमार हो जाता है। इसलिए हमें आज यह सोचना होगा कि हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं। बचपन में पड़ी हुई बुरी आदतों को जवानी में छुड़ाना बड़ा कठिन होता है। इसलिए हमें यह समझना होगा कि हम अपने बच्चों को वहीं सिखाएं, वहीं बताएं और वही दिखाएं जो उनके भविष्य के लिए उचित हो। आदतों को अगर गहराई से देखा जाए तो पशु-पक्षी भी अपने आदतों के गुलाम हो जाते हैं। पिंजरे का तोता आजाद करने के बाद भी पिंजरे में ही आकर बैठता है। अभ्यास से पका हुआ घोड़ा अपने मालिक

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष **महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास ...**

सफलता की बुलंदियों को नहीं छू पाते। क्योंकि उचित वातावरण, सही योग्यता और सही योजना के साथ-साथ पर्याप्त साधन-सुविधाओं की प्राप्ति भी सफलता की अनिवार्य आवश्यकता है। यहां पर सभी बच्चों को सुंदर आवास, स्वच्छ पौष्टिक भोजन और उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त हो रहा है। प्रतिभा विकास संस्थान ने आरंभ में एक दर्जन विद्यार्थियों के साथ इस महत्त्वपूर्ण योजना की शुरूआत की थी। जिसमें आज 30 विद्यार्थियों का एक बड़ा ग्रुप प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा है। इन सभी बच्चों के लिए दिल्ली जैसे शहर में भोजन, आवास और प्रशिक्षण की संपूर्ण सुविधाएं संस्थान प्रदान करता है।

प्रवेश प्राप्ति की प्रक्रिया

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान ने प्रवेश प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों को चयन की सुनियोजित प्रक्रिया में ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करने के बाद लिखित और मौखिक परीक्षा के लिए बुलाया जाता है। इस प्रक्रिया में जिन बच्चों को सफलता मिलती है उन्हें ही संस्थान प्रशिक्षण प्रदान करता है। अभी पिछले दिनों संस्थान में प्रवेश हेतु पूरे भारत से 3000 से भी ज्यादा विद्यार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया था, जिनमें से लगभग 300 विद्यार्थियों ने लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की और बाद में 40 विद्यार्थी इंटरव्यु के लिए क्वालीफाई हुए और उनमें से सुयोग्य विद्यार्थियों का चयन किया गया। चयन की प्रक्रिया में सफलता प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभावान बच्चे आज प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

संस्थान की छात्रा अंजु गर्ग बनी सैंट्रल एक्साइस इंस्पैक्टर

महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास संस्थान को अभी 1 वर्ष 3 महीने ही पूरे हुए हैं और यहां पर पढ़ने वाले बच्चे सफलता की बुलंदियों को छूने लगे हैं। अभी हाल ही में संस्थान में शिक्षारत्त अंजु गर्ग ने "सैंट्रल एक्साइस इंस्पैक्टर" के पद पर नियुक्त होकर महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास संस्थान और आर्य समाज का नाम रोशन किया इस हेतु उन्हें बहुत-बहुत बधाई और मंगलमय शुभकामनाएं।

- जारी पृष्ठ 5 पर

ज्योति गुलाटी विशिष्ट प्रतिभा स्कॉलरशिप योजना का शुभारम्भ

मानव समाज में ऐसी दिव्यांग प्रतिभाएं भी हैं जो शारीरिक अक्षमता के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी अत्यधिक कमजोर होती हैं। इन मूल भूत कारणों से उनके अंदर अद्भुत प्रतिभा होने के बावजूद भी वे समाज में पिछड़े ही रह जाते हैं। ऐसे प्रतिभावान बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु 'ज्योति गुलाटी विशिष्ट प्रतिभा स्कॉलरशिप' के रूप में एक नई दिव्य सेवा योजना का अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें कोई भी बाल प्रतिभा दिव्यांग होकर भी अपने आपको मजबूर और बेबस महसूस न करे, अपनी प्रतिभा को निखार कर उचित सम्मान प्राप्त कर अपना कल्याण करें। ***सम्पर्क सूत्र : 9540002856***

भारत के सभी प्रतिभावान बच्चों को आमंत्रण

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा भारत के समस्त आर्य समाज परिवार के बच्चों, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणयों, आर्य अनाथालय आदि अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त स्नातक, स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को प्रेम पूर्वक आमंत्रण दिया जाता है कि आप भी महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करके संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) में सेवारत्त हो सकते हैं। इसके लिए आप अपनी अपेक्षित योग्यताओं के साथ संस्थान के नियम एवं कार्यक्रमानुसार चयन की प्रक्रिया में भाग लेकर अपना स्थान सुनिश्चित करें। इच्छुक महानुभाव नीचे दिए गए मोबाइल/ईमेल पर सम्पर्क करें।

प्रिय प्रतिभावान विद्यार्थियो! तुम्हें मेरा बहुत-बहुत प्यार और आशीर्वाद

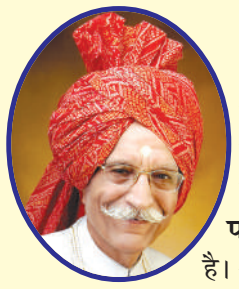

पेड़ पर लगने वाले सारे फल-फूलों के बीच अंकुरित नहीं होते, सारे अंकुर पौधे नहीं बनते, सारे पौधों पर फल-फूल नहीं लगते। यह एक प्रकृति का खास नियम है कि जब तक उचित वातावरण और आवश्यक साधन सुविधाएं प्राप्त न हो तो बड़ी से बड़ी योग्यता या संभावना भी धरी की धरी रह जाती है। लेकिन इसका मतलब यह कभी नहीं है कि इंसान परिश्रम और पुरुषार्थ करना ही छोड़ दे। बल्कि परिश्रम और पुरुषार्थ के साथ ईश्वर से प्रार्थना करते हुए जो लगातार अभ्यास करता है उसी को सफलता मिला करती है। **करत-करत अभ्यास के जड़मति हो सुजान, रस्सी आवत जात से सिल पर पड़त निशान** अर्थात् लगातार का अभ्यास करने से सफलता जरूर मिलती है। जैसे रस्सी के लगातार आने-जाने से पत्थर की शिला पर भी निशान पड़ जाता है। आप सब असाधारण प्रतिभावान विद्यार्थी हैं और आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा यह कोशिश की जा रही है कि तुम्हें वे सारी सुविधाएं दी जाएं जिससे तुम देश सेवा के लिए आगे बढ़ सको। परन्तु सुविधाएं अपनी जगह हैं और मेहनत अपनी जगह। मेहनत की जगह सुविधा नहीं ले सकती और सुविधा की जगह मेहनत कभी नहीं ले सकती। इसलिए इसका सही उपयोग करके पूरी ईमानदारी से मेहनत करो और अपना भविष्य सुंदर बनाओ। तुम देश के होनहार और कर्णधार युवक हो। भारत का भविष्य और विश्व की आशा हो। केवल अपनी और अपने परिवार की ही कभी नहीं सोचना, सारी दुनिया अपनी है और आप सारी दुनिया के हो। जब इस तरह से सोचोगे तो सेवा का भाव मन में जागेगा। आप सभी मानव सेवा के लिए तैयार हो जाओ आपको सफलता जरूर मिलेगी। आपको पुनः मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद और प्यार। – *महाशय धर्मपाल*

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान में अध्ययनरत कुछ छात्र-छात्राओं की प्रतिक्रिया

प्रतिदिन बढ़ रहा है-लक्ष्य प्राप्ति का हौसला

I belong to a place where i have lack of resources and financial constraints to afford costly coaching classes which is required for civil services exam.Last Year, I came to delhi and living under the umbrella of Mahashaya Dharampal Arya Pratibha Vikas Sansthan as my all Educational and Living Expense are taken care of and now i can focus on succeeding in my studies.It is only possible due to Mahashya Dharampal Arya Pratibha Vikas Sansthan.

This scholarship is a boon for me.Now i am feeling confident about my preparation.Apart from this, I have also explore spiritual world by attending yajya (Havan) and daily chanting of Gaytri mantra which give us mental strength and peace.

– *मोहन्ती साहू, राउरकेला*

मित्रवत मिलता है-प्रबंधन समिति का सहयोग

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान (MDAPVS) अपनी तरह का एक अद्वितीय एवं अनोखा संस्थान है। मेधावी छात्रों को अध्ययन का वातावरण, भावनात्मक एवं अध्यात्मिक सहयोग के साथ वित्तीय समर्थन सराहनीय है। मेरे लिये इसका सहयोग वरदान की भांति है। आर्य समाज द्वारा प्रदान की जाने वाली आवासीय, भोजन-व्यवस्था एवं शैक्षणिक सुविधायें असाधारण हैं। प्रबंधन समिति का सहयोग मित्रवत मिलता है एवं सभी विद्यार्थियों की आवश्यकता को पूरा करने वाला है। यह मेरे लिए घर से दूर एक परिवार की भांति है। – *आकाश गौतम, आगरा*

हमारी सफलता में सहायक और प्रेरणादायक है - संस्थान

महाशय आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के साथ मेरा अनुभव निश्चित रूप से सहायक और प्रेरणादायक रहा है। सर्वप्रथम, संस्थान के द्वारा अकादमिक सहायता (कोचिंग, टेस्ट, आदि) तथा भोजन-रहने की सुविधा यह सुनिश्चित करती है कि हम अपना ध्यान पूर्ण रूप से अपने लक्ष्य पर केन्द्रित रखें। इससे भी महत्त्वपूर्ण, सम्मानित व्यक्तियों द्वारा हुए विभिन्न सत्र हमें एक आई.ए.एस. अधिकारी बनने के लक्ष्य के साथ-साथ अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र के लिए एक बेहतर व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

– *शशांक पाण्डेय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)*

मेरे लिए एक वरदान है-आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

मेरा नाम गोविंद है। मैंने गुजरात के सरकारी इंजीनियरींग कालेज से ई.सी.ई में चार वर्षीय डीग्री का कोर्स किया है। मेरी आइ.ए.स सर्विस में जाकर देश की सेवा करने की इच्छा है। संसाधन एवं पैसों के अभाव में न तो मैं दिल्ली में रह सकता था, न ही कोचिंग ले सकता था। परन्तु MDAVPS ने पूरे देश में परिक्षा करा कर, कबिल बच्चों को छांटा एवं उन्हें पूर्ण मदद दी। हम सभी देश के अलग-अलग प्रांतों से आये हैं, हमें रहने, खान-पान एवं कोचिंग की उत्तम व्यवस्था दी गई है। इसके साथ ही हमें महाशय धर्मपाल जी एवं श्री विनय आर्य जी की दिशा दृष्टि और अनुभव का मार्गदर्शन भी मिला। यही नहीं, एक पूरी टीम हमारा ख्याल रखती है, निरीक्षण करती है, जरूरत पड़ने पर हमारी गलतियां सुधारने का मौका देती है। मेरे लिये यह एक वरदान है, शायद कितना भी करने पर मैं इस संस्था का कर्ज न चुका पाऊं। पर शायद देश के लिए कुछ करना, उसे और आगे ले जाना एवं अपने अन्दर ईमानदारी और कर्मठता को सजग रखना ही सबके प्रति श्रद्धा और सम्मान प्रकट करना होगा!! – *गोविंद, गुजरात*

संस्थान के सहयोग बिना तैयारी करना सम्भव न होता

दिल्ली में रहकर सिविल सेवा की तैयारी करने मेरे लिए शायद सम्भव न होता यदि मुझे संस्थान का सहयोग न मिल पाता। हॉस्टल का शान्त वातावरण, अध्ययन से लेकर भोजन आदि सभी बातों में उत्तम व्यवस्था है। आर्यसमाज के माध्यम से साप्ताहिक हवन में भाग लेना और विद्वानों के प्रवचनों को सुनने से सामाजिक व आध्यात्मिक मर्मों को वैज्ञानिक ढंग से समझना जीवन मे बहुत सी समस्याओं का हल प्रदान करता है।

– *विशाल गुप्ता, हरदोई (उत्तर प्रदेश)*

संस्थान ने दिया आर्थिक, शैक्षणिक और मानसिक संबल

यह मेरा सौभाग्य रहा है कि मेरा चयन आर्य प्रतिभा विकास संस्थान में हुआ। आर्य समाज की तरफ से यह बहुत ही सराहनीय प्रयास है। यहां पर मुझे प्राचीन भारतीय संस्कृति से अवगत होने और वैदिक संस्कृति को जानने का मौका मिला।

आर्य समाज की तरफ से यहां पर मुझे आर्थिक, शैक्षणिक एवं मानसिक संबल मिला। इस प्रयास के लिए मैं आर्य समाज का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ एवं प्रयास करूँगा की मैं IAS बनकर आर्य समाज को श्रद्धा अर्पण कर संकू।

– *बाबी जायसवाल, दौसा (राजस्थान)*

सकारात्मक परिणाम की है प्रतीक्षा

मैं नितेश कुमार पटना, बिहार का रहने वाला हूं। मैंने 2015 में एनआईटी तिरुचिरापल्ली से बीटेक किया। मैं जुलाई 2019 में इस कार्यक्रम में शामिल हुआ। तब से मेरा अनुभव बहुत सकारात्मक रहा है। मैं वास्तव में बेहतर आवास, स्वादिष्ट भोजन, पाठ्यक्रम नामांकन में आर्थिक मदद और साप्ताहिक यज्ञ के रूप में भारतीय संस्कृति और नैतिकता के लिए सबसे महत्वपूर्ण रूप से कलात्मक रूप से समर्थन की सराहना करता हूं। इनके अलावा, आर्य समाज मंदिर के सभी सदस्यों का नैतिक समर्थन वास्तव में सराहनीय है। मैं इस कार्यक्रम के सकारात्मक परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

– *नितेश कुमार, पटना (बिहार)*

आर्य समाज के सिद्धांतों से जागा है-सेवा-समर्पण भाव

For me Arya Pratibha Vikas sansthan is more than a family . Academics and personal development are well taken care of here . We are taught ideals of Arya Samaj here which I found very helpful while dealing with stressful situations. The initiative was supposed to be a help in academics but I found it helpful in every aspect like emotional and mental support.

I failed in upsc 2019 pre despite this the organisation maintained its trust on me . I could clear Haryana state pcs mains which I wrote immediately after upsc 2019 prelims . It was possible only because their trust and support. I am selected as excise inspector. I am waiting for Haryana state pcs final result Also I have qualified CAG assistant audit officer. All this I could do because of the support of the organisation. I am very glad that I became a part of the initiative and I would be really glad to serve this organisation in future. Everyone is very helpful here.

– *अंजु गर्ग, मेवात (हरियाणा)*

बहुत उम्दा है-प्रबंधन संस्थान का

मेरा नाम प्रशांत राज है। मैं 2019 में महाशय आर्य प्रतिभा विकास संस्थान में शामिल हुआ हूं। मैं आभार व्यक्त करूंगा पूरे संस्थान तथा सब लोगों को जिन्होंने यह रहने और खाने का उम्दा प्रबंध कराया है। हर सुविधा चाहे खाने, रहने में या पढ़ाई से मिलती-जुलती कोई भी बात सब हम लोगों के हिसाब से चलती है, जिससे हमें यहां रहने में कोई तकलीफ नहीं होती। साथ ही साथ अलग अलग जगहों के लोग यहां रहते हैं, जिससे पढ़ाई में कोई परेशानी तुरंत सुलझ जाती है। हमारी टेस्ट सीरीज, निबंध की परीक्षा के लिए यही पर ही मेंटर का इंतजाम किया गया है।

– *प्रशांत राज, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)*

प्रशासनिक अधिकारी और बेहतर नागरिक बना रहा है संस्थान

MDAPVS ने मुझ जैसे आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को एक उपयुक्त वातावरण प्रदान करके मेरी तैयारी में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसके लिए मैं संस्थान का विशेष रूप से कालरा सर, बलदेव सर, गौरव सर का आभारी हूं। संस्थान न सिर्फ हम लोगों को एक बेहतर प्रशासनिक अधिकारी बनने में सहयोग कर रहा है बल्कि एक बेहतर नागरिक कैसे बनें इस पर भी ध्यान केन्द्रित करता है।

– *शिवम पाण्डेय, शिवपुरी (म.प्र.)*

संस्थान का हिस्सा बनना मेरा सौभाग्य

मेरा नाम सुशांत है और मैं जम्मु कश्मीर से हूं। मैं राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर हूँ। मैं महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान का हिस्सा बनकर बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं। यह छात्रों के कल्याण और भविष्य के प्रशासनिक अधिकारी बनाने कि दिशा में काम करने वाला एक बहुत ही महान और समर्पित संगठन है। वे यूपीएससी के इच्छुक छात्रों को तैयारी के दौरान सब कुछ प्रदान कर रहे है, जैसे कि अच्छा भोजन, कोचिंग कक्षाएं और अन्य कोचिंग कक्षाओं में शामिल होने के लिए वित्तीय मदद जो कि प्रशासनिक अधिकारी बनने की यात्रा के दौरान बहुत सहायक होती हैं।इस संस्था के सभी सदस्य बहुत सहयोगी हैं। मैं गर्व से कह सकता हूं कि यह वास्तव में मेरे लिए एक परिवार है। – *सुशांत, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)*

मेरी सफलता के प्रेरणा स्रोत है-महाशय धर्मपाल

मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझे मेरे लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक परिवारमय 'म.घ.अ.प्र.वि सं' का अतुलनीय वातावरण, प्रबंधन-समिति का मार्गदर्शन, शैक्षणिक सुविधाओं के साथ आपसी प्रेम आदि सब प्रशासनिक परीक्षा की तैयारी में कुशल साबित हो रहे हैं। महाशय धर्मपाल जी का सुगन्धमय जीवन, मेरे लिए सफलता और समर्पण का एक प्रेरणास्त्रोत है। प्रतियोगी अभ्यर्थियों के लिए समस्त सुविधाओं का संगम मेरे लिये वरदान साबित हो रहा है। जीवन के हर पड़ाव में इस परिवारमय प्रकल्प का सहयोग अविस्मरणीय रहेगा। – *विमलेश त्रिपाठी, सतना (म.प्र.)*

Continue from last issue

Education Method and Plan

Curriculum and Educational Plan

Here we give the plan of education, along with its broader curriculum, entailling 20 to 21 years in all, following which the best and comprehensive knowledge can be mastered easily, and the life can be enjoyed thereafter contently. Otherwise such a comprehensive training can not be given even in hundred years.

First Three Years

Fducation should start with the learning of the correct and accurate *phonetic* pronunciation, through the help of *'Paniniya Siksha'* following which a complete study of grammar should be made in two stages, first of the principles alone, followed by its descriptive application. The principles can be learnt best through *'Panini's Astadhyayi';* while, the rest could be mastered through *Patanjili's Mahabhashya.* If we learn grammar correctly and completely, we become capable of learning all types of scriptures and other wordly knowledge.

Next two years

In six months the lexicons and etymologies of the Scriptural and other words should be mastered, followed by metrical structure of the verses in 4 months, so as to make a student capable of creating his own poetry in metrical form or otherwise. In the next one year all the good portions of the works like *Manusmrti, Valmiki's Ramayana* and *Mahabharata,* must be taught grammatically and stylistically, so as to make him capable of learning the method himself.

Next two year

All the major *Upanishads,* along with all the six Vedic Schools of Indian Philosophy, should be taught in this .period.

8th to 13th year : Secondary stage

All the four Vedas, along with their Brahmanas should be taught thoroughly, along with the ritual practices. All associated litrature should be mastered within this period.

Specialised Study : Higher stage

After completing this basic study, one must learn the *Ayurveda - Indian* Medical system in next four years, to be followed successively by the specialised training in *Dhanurveda,* inclusive of Politics, Economics, and Military Science etc., in *Gandharvaveda,* i. e. Music and other fine arts; and in *Atharvaveda,* i. e, Natural and industrial scientific and' technical knowledge. All these three may consume two years each. In the end one must also know *Jyotisha,* i. e. astronomical science, along with Mathematics, Algebra, Geometry, Geography and Geology etc. This stage might be reduced to eight years, if one can not master all of the aforesaid.

Thus, an alround mastery could be attained in twenty one years, or utmost in twentyfive years. by following the aforesaid course. It must be noted that the students should. be taught only the works of great sages, as they are; unbiased, scholarly and authentic.

Only that country can progress; and could be treated as; fortunate, the students of which observe celibacy, while in, learning and follow the *Vedas* in their lives.

To be continued.....

With thanks By:
"Flash of Truth"

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अत: समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण **'सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका'** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। - ***महामन्त्री***

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ⋆ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ⋆ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ⋆ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमन्त्रित

सरकारी/ गैर सरकारी/ निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, गुरुकुलों, पाठशालाओं, आश्रमों में आर्ष पाठ विधि से विद्या अध्ययन करने वाले अथवा ऐसे छात्र-छात्राओं जो अन्य विषयों के साथ संस्कृत साहित्य का भी अनिवार्य विषय के रूप में अध्ययन कर रहे हैं अथवा ऐसे विद्यानुरागी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं अथवा जिनके माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं, को आर्यसमाज की ओर से छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जा रही है। सुविधा का लाभ उठाने के लिए उपरोक्त के अन्तर्गत आने वाले छात्र-छात्राएं अपना नाम, पिता/माता/संरक्षक का नाम, पता, विद्यालय/संस्थान का नाम लिखते हुए आवेदन करें। आवेदन पत्र पर विद्यार्थी के प्रधानाचार्य/आचार्य के हस्ताक्षर सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य हों।

इच्छुक विद्यार्थी/संस्थान अपने आवेदन पत्र 'महामन्त्री' के नाम निम्न पते पर प्रेषित करें-

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

- ***महामन्त्री***

निर्वाचन समाचार

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
कमला नगर, दिल्ली-110007

प्रधान : श्री रणवीर सिंह आर्य
महामंत्री : श्री सुभाष दुआ
कोषाध्यक्ष : श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्त

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज अमर कालोनी का 52वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी नई दिल्ली का 52वां वार्षिकोत्सव समारोह 13 से 15 दिसम्बर, 2019 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी विष्वंग जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ एवं श्री भानुपकाश शास्त्री जी के भजन होंगे। महिला सम्मेलन 14 दिसम्बर को 12:30 बजे से एवं समापन 15 दिसम्बर को प्रात: 8 से 1:30 बजे तक आयोजित होगा। - ***ओम प्रकाश छाबड़ा, मन्त्री***

शोधकर्त्ता एवं शोध संस्थाओं के लिए सूचनार्थ

समस्त पाठकों एवं आर्यजनों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाज, वैदिक धर्म एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से संबंधित विषयों पर शोध करने वाले विद्यार्थियों तथा शोध संस्थानों के लिए सेवा, सहयोग एवं सहायता कार्य आरम्भ किया जा रहा है। समस्त शोधार्थी महानुभाव जो उपरोक्त विषयों पर शोध कार्य कर रहे हैं तथा किसी प्रकार के सहयोग, सेवा या सहायता के इच्छुक हैं से निवेदन है कि वे अपना प्रोजैक्ट/शोध विषय से सम्बन्धित जानकारी तथा शोध कार्य में अपेक्षित सहयोग **"संयोजक (शोध)"** के नाम "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001" के पते पर लिखकर भेजें। - ***महामंत्री***

आर्यसन्देश साप्ताहिक में बाल आर्य प्रतिभा विकास स्तम्भ

आर्यसन्देश साप्ताहिक के आगामी अंकों में 'बाल आर्य प्रतिभा विकास' का एक नियमित स्तम्भ आरम्भ किया जाएगा। इस स्तम्भ में आर्य परिवारों के सभी होनहार बच्चों को सादर आमन्त्रण है कि वे अपनी विशेष योग्यतानुसार स्वरचित कविता, भजन, महापुरुषों के चित्रों की पेंटिंग, शिक्षा या खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अथवा किसी भी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति का प्रमाण सहित समाचार बच्चे के फोटो के साथ हमें भेजें। उसे उचित स्थान पर प्रकाशित किया जाएगा। - **सम्पादक**

आवश्यकता है

आर्य अनाथालय व उससे सम्बन्धित संस्थाओं के निराश्रित/अनाथ बालक/बालिकाओं के आश्रम के लिए पुरुष व महिला संरक्षक (वार्डन), सेना से सेवानिवृत प्रशासनिक अधिकारी, पुरुष नर्स, सभागार प्रबन्धक व बिजली कर्मचारी की आवश्यकता है, जिसे सेवा कार्य में रूचि हो। उम्र 40 से 60 के बीच। नशे से मुक्त, शाकाहारी व संस्था के भवन में रहना अनिवार्य। भोजन व निवास के अतिरिक्त वेतन योग्यतानुसार। 10-12-2019 तक आवेदन भेजें।

सचिव, आर्य अनाथालय,
4844/24 अंसारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली-110002

ध्यान शिविर

(15 से 22 अक्तूबर, 2019)

आचार्य सत्यजित् जी आर्य के मार्गदर्शन में

- ध्यान क्या है?
- पूर्ण मौन
- ध्यान क्यों करें?
- आदर्श दिनचर्या
- ध्यान कैसे करें?
- शंका समाधान

ध्यान व आध्यात्मिक उन्नति के अनुकूल शान्त-सुरम्य-शुद्ध वातावरण

इच्छुक व्यक्ति कृपया सम्पर्क करें

वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्यवन, रोजड़, पो.-सागपुर, साबरकाठा, (गुजरात) - 383307
Web :vaanaprastharojad.com
Email : vaanaprastharojad@gmail.com

वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। - ***महामन्त्री***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***9650183335***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

राष्ट्र रक्षा यज्ञ का सफलता के साथ सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर 3,4,5,6 एवं विजय विहार, रोहिणी द्वारा बनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के साथ 1 दिसम्बर, 2019 को पार्क संख्या 1, पाकेट ए-2, सैक्टर 5, रोहिणी में सात कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ का सफल आयोजन किया गया। यज्ञब्रह्मा सुरिन्द्र चौधरी ने यजमानों को यज्ञ से सम्बन्धित कुछ तथ्य ऋषि उद्दालक के प्रश्नों के माध्यम से स्पष्ट किए, जैसे यज्ञ की आत्मा स्वाहा शब्द है, यज्ञ के प्राण इदं न मम है, यज्ञ का मुख अग्नि है, यज्ञ का सार सुगन्धि है और यज्ञ की सफलता दान है। सुनीता चौधरी के भजन प्रस्तुति से वातावरण संगीतमय हुआ। संघ प्रचारक श्री विरेन्द्र ने भारत में हिन्दुओं की घटती जनसंख्या पर अपने विचार प्रकट किए। विरेन्द्र जी ने कहा कि यदि आज भारत के हिन्दू नही जागे जो वह दिन दूर नही जब पाकिस्तान और बंगलादेश की तरह भारत मुस्लिम देश बन जाएगा। सुरिन्द्र चौधरी ने कहा कि विरेन्द्र जी के बात को और अधिक समझने के लिए दो पुस्तको को अवश्य पढ़ना चाहिए, पहली पुस्तक 'अंतिम हिन्दू' और दूसरी पुस्तक 'काला पहाड़'। इस कार्यक्रम में पाकेट ए-2 के निवासी उत्साहपूर्वक सम्मलित हुए। कार्यक्रम संयोजक श्री लोकेश गुप्ता ने सभी व्यवस्थाओ को सुचारू रूप से क्रियान्वित करके कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

- ***संयोजक***

पृष्ठ 4 का शेष

आन्तरिक परिवर्तन से सम्भव .....

के घर स्वयं पहुंच जाता है। तो जब पशुओं की यह स्थिति है तो मनुष्यों का क्या कहना? बहुत दिनों तक बीड़ी-सिगरेट आदि मादक नशों की आदत पड़ जाने के बाद आदमी न चाहते हुए भी उन्हें किए बिना नहीं रह पाता। बहुत दिनों तक जेल में रहने वाला कैदी एक दिन जेल को ही पसन्द करने लगता है। इसलिए बचपन में ही माता-पिता द्वारा बच्चों के सामने ऐसा प्रस्तुत किया जाए, जिससे वे अच्छे पुत्र, अच्छे पिता, अच्छे पति और देश के अच्छे नागरिक बने।

समाज में बढ़ती अपराधिक मानसिकता

आधुनिक परिवेश में चारों तरफ एक ही आवाज सुनाई देती है कि सख्त से सख्त कानून बनाया जाए। जबकि लगातार नए-नए कठोर कानून बनाए भी जा रहे हैं। लेकिन फिर भी क्या क्राइम कम होता दिखाई दे रहा है? बल्कि लगातार बढ़ता ही जा रहा है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा कारण है अपराधी मानसिकता। अपराधी मानसिकता का जन्म भी कहीं-न-कहीं घर की प्रथम पाठशाला से ही आरंभ होता है। जो भी आज समाज में अपराधी बनकर खड़े हैं वो भी तो किसी-न-किसी के संतान होंगे? उन्हें भी तो किसी न किसी ने पाला-पोसा होगा? यहां पर एक बात और विचारणीय है कि कोई भी माता-पिता चाहे वे कितना भी बड़ा अपराधी मानसिकता का क्यों न हो लेकिन वह अपनी संतान को अपराधी कभी भी बनाना नहीं चाहता। यहां तक कि एक शराबी और जुआरी आदमी भी अपने बच्चों को इन दुर्गुणों से बचाकर रखना चाहता है। फिर क्यों इतने अपराधी समाज में लगातार पैदा हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है वातावरण। आज घर, परिवार, समाज, देश और दुनिया का वातावरण ही कुछ ऐसा बन गया है या बनता जा रहा है कि जिसमें जाने-अनजाने दोनों तरह से अपराध के वृक्ष पनपते जा रहे हैं। चाणक्य का वचन है कि चाहे कोई व्यक्ति अपने जीवन में अकेला ही क्यों न रहे लेकिन बुरी संगति में कदापि न रहे। अपराधियों का जन्म गलत संगति से इतनी जल्दी होता है कि जैसे फसल के बीच खरपतवार उगता और बढ़ता चला जाता है।

हिंसा का बीजारोपण

आजकल बचपन में बच्चों के भीतर हिंसा का बीजारोपण करने के कई सशक्त माध्यम है। टी.वी. पर दिखाए जाने वाले क्राइम पैट्रोल जैसे चैनल, लड़ाई-झगड़ें और मारपीट को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रम और चैनल इसके साथ-साथ दिखावट, बनावट और सजावट का बाजार, माता-पिता और परिवारजनों के द्वारा बच्चों के गिरने पर या चोट लगने पर यह कहा जाना कि इसको मारो या चींटी मर गई अथवा और अन्य कई ऐसे उदाहरण भी हैं जैसे एक- दूसरे को मारना-पीटना, गाली देना अथवा अपशब्द कहना ये सब कार्यक्रम बच्चे के कोमल मन पर अंकित हो जाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप वे बाद में एक बुराई का अंकुर बनकर पल्वित और पुष्पित होने लगते हैं। फिर मां-बाप अपना सिर पकड़कर बैठ जाते हैं और कहते हैं कि हमने तो ऐसा नहीं सिखाया था जो हमारे सामने ये प्रस्तुत कर रहे हैं। युगांडा के राष्ट्रपति ईदी अमीन और रोम के नूरो जैसे क्रूर और जगन्य अपराधी लोगों की पृष्ठभूमि जब मनोवैज्ञानिकों ने देखी तो वे आश्चर्य में पड़ गए। उन्हें ज्ञात हुआ कि नूरो के पिता उसकी मां को इतनी बुरी तरह से पीटते थे कि वह लहु-लुहान हो जाती थी। और नीरो बचपन में उस सारे दृश्य को देखता रहता था। उसी क्रुरता से प्रेरित होकर नूरो इतना बड़ा हिंसक बना कि वह लोगों को खंबे पर बांधकर नीचे से आग जलाता था और जब वो लोग तड़पते थे तब वह वायलन बजाता था। इससे पता चलता है कि हिंसा का भाव, विचार जब आदत बनकर के सामने आता है तो कितना बड़ा विनाश सामने खड़ा हो जाता है।

- ***क्रमश:***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 दिसम्बर, 2019 से रविवार 8 दिसम्बर, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 05-06 दिसम्बर, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 दिसम्बर, 2019

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2020 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

-: प्राप्ति स्थान :-

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

प्रतिष्ठा में,

विवाह आदि शुभ अवसरों पर भेंट हेतु तांबे के यज्ञकुण्ड सैट

मूल्य 1100/- रु. मात्र

परिवारों में यज्ञ को बढ़ावा देने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भेंट हेतु 9 पात्रों का यज्ञ कुण्ड के सैट तैयार कराए गए हैं। यह सैट आप किसी भी शुभ अवसर जन्मदिन, वर्षगांठ, विवाह संस्कार या अन्य किसी भी शुभ मौके पर आप किसी भी परिवार को, व्यक्ति को भेंट कर सकते हैं या अपनी संस्था के उत्सवों पर आमन्त्रित अतिथियों को भी भेंट कर सकते हैं। आइए, एक नई परम्परा का शुभारम्भ करें - घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ की भावना को साकार करें और यज्ञ प्रसार में सहयोगी बनें।

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

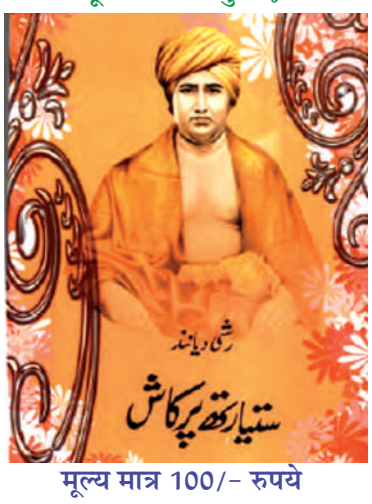

मूल्य मात्र 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी
(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

यज्ञ कुण्ड सैट प्राप्त करें

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य आपने अवश्य देखा होगा। महासम्मेलन में प्रयुक्त किए गए यज्ञ कुण्ड सैट आपके परिवार, संस्था, समाज में प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा दैनिक यज्ञ प्रेमियों के लिए उपलब्ध।

मूल्य मात्र 900/- रुपये

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह